ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर , दरभंगा

पी-एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित मानविकि संकाय (मैथिली) विषयक

शोध – प्रारूप

प्रस्तावित शोधक विषय –

" शैलेन्द्र आनन्दक रचनाक विश्लेषणात्मक अध्ययन "

शोध – पर्यवेक्षक

दमन कुमार झा

प्रो० दमन कुमार झा 30।3।24

प्राचार्य एवं अध्यक्ष

विश्वविद्यालय मैथिली विभाग

ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय

दरभंगा ।

शोधार्थी

शीला कुमारी

30/03/2024

शीला कुमारी

BR04000099

PAT-2021-22

E2211013 JRF

ग्रा०+प्रो० – मझौलिया

थाना – अशोक पेपर मिल

प्रखंड – हायाघाट

जिला –दरभंगा

पिन कोड – 846002

शैलेन्द्र आनन्दक रचनाक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

मैथिली साहित्यमे बहुविधावादी रचनाकारक रूपमे शैलेन्द्र आनन्दक नाम प्रमुखतासँ लेल जाइत छनि। सत्तरिक दशकसँ अनवरत अपन सारस्वत साधानासँ मैथिली साहित्य-भंडारकेँ भरैत रहलाह अछि। शैलेन्द्र आनन्दक जन्म मधुबनी जिलान्तर्गत लोहना गाममे 1952 ई० केँ भेलनि ।गामहिसँ अध्ययन प्रारम्भ क', अध्यापनक काजमे अपनाकेँ समर्पित क' देलनि। एहि बीच ई मैथिली पत्रिका 'आहूति'क सम्पादन-प्रकाशन करैत कथा ,नाटक,कविता आ विभिन्न विषयपर आलेख लीखैत मैथिली साहित्य संसारमे अपन परिचिति कायम कैलनि । सफल नाट्य-कृति, रचनाकार , अभिनेता -निर्देशक शैलेन्द्र आनन्द विभिन्न साहित्यक पुरस्कारसँ सम्मानित लेखक छथि । हिनक कृतित्वक जँ सम्यक विवेचन कयल जाय तँ ई कहब कठिन भ जायत जे ई की छथि? कथा हो कि नाटक ,कविता हो कि निबन्ध ,एकांकी हो कि रंगमंच सभमे समान गतिसँ महारत हासिल छनि। तें ई कहि सकै छी जे शैलेन्द्र आनन्दक लेखनी जाहि विधामे चलल ओ निस्सन अछि। हिनक 'थोपड़ी' कथापर 'गोरकी' नामसँ डकुमेंट्री फिल्म बनल अछि । एहन व्यक्तित्वक लेल हम शोध करबाक मोन बनौलहुँ, आ शोध निर्देशक एकर स्वीकृति द' हमर उत्साहकें और बल प्रदान कैलनि।

शोधक उद्देश्य

साहित्य समाजक पथ -प्रदर्शक होइत अछि । समाजकें अभ्युन्नतिक पथपर बढ़यबाक दायित्व साहित्यकारक थिकनि। सामान्य पाठककें कृतिसभसँ परिचित करायबा लेल आवश्यक भ जाइत छैक। कृति लेखकक जानकारी देब विवेच्य साहित्यकारक कृतिक विवेचन -विश्लेषणसँ सामान्यो पाठक लाभान्वित भ' सकैत छथि । समाजकें विकासोन्मुख बनएबाक लेल एहन रचनकारक कृतिकें सम्मुख अनबाक चेष्टा भावी पीढ़ीक लेल अवदान सिद्ध होइत अछि आ ओहिसँ परिचित करायब हमर उद्देश्य अछि।

शीला कुमारी

कार्यप्रणाली

मैथिली साहित्यमे शैलेन्द्र आनन्दक योगदानकें दर्शयबाक हेतु सर्वप्रथम हुनक समस्त कृतिकें एकत्रित कयल जायत। हिनक प्रकाशित पोथीक अतिरिक्त अनेकानेक पत्र-पत्रिका एवं समवेत ग्रंथ सभमे छिड़ियाएल रचना सभकें संग्रहित कयल जायत । पोथी आ फुटकर रचना सभपर लिखल हिनका पर आलेख ,समीक्षा आदिकें एकत्रित कयल जायत । एहि सामग्री सभक संकलन कएलाक उपरान्ते शैलेन्द्र आनन्दक विषयमे पूर्ण जानकारी भेटि सकैत अछि । सामग्री जुटयबाक क्रममे विभिन्न पुस्तकालय, लेखकक निजी पुस्तकालय एवं हिनकासँ सम्बंधित व्यक्ति सभसँ सम्पर्क कयल जायत। जे सभ रचना उपलब्ध होएत (प्रकाशित ओ अप्रकाशित) सभक उल्लेख शोध प्रबंधमे कएल जाएत ।

शोधस्रोत एवं प्रविधि

एहि विषयपर शोधक लेल ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, केन्द्रीय पुस्तकालय , दरभंगा अन्य व्यक्तिक व सार्वजनिक पुस्तकालयसँ संपर्क कएल जायत। संगहि साहित्यकार लोकनिसँ सेहो एतद सम्बन्धी जानकारी प्राप्त कयल जा सकैत अछि ।

शोध-विषयक कार्य

हमरा जनैत ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा एवं अन्य विश्वविद्यालयमे मैथिली साहित्यमे 'शैलेन्द्र आनन्दक रचनाक विश्लेषणात्मक अध्ययन' विषय पर शोध -कार्य नहि भेल अछि । एहि कारणें हम एहि विषय पर शोध करबाक निर्णय कयलहुँ । आवश्यकता पड़ला पर शोध-प्रबन्ध लिखबाक क्रममे परिवर्तन एवं परिवर्धन कएल जा सकैत अछि । प्रस्तावित शोध-प्रबन्धक सम्भावित रूपरेखा निम्नलिखित अछि।

1 . प्रथम अध्याय : शैलेन्द्र आनन्दक जीवन ओ साहित्य

2 . द्वितीय अध्याय : शैलेन्द्र आनन्दक कथा साहित्य

3 . तृतीय अध्याय : शैलेन्द्र आनन्दक नाटक एवं एकांकी

4 . चतुर्थ अध्याय : शैलेन्द्र आनन्दक कविता

शीला कुमारी

5 . पंचम अध्याय : शैलेन्द्र आनन्दक निबन्ध एवं अन्य रचना

उपसंहार

परिशिष्ट

(क) विवेच्य साहित्यकाररौं साक्षात्कार एवं अन्य अप्रकाशित रचनाक सूची

(ख) अधीत ग्रंथक सूची

संभावित शोध -प्रबन्धमे अध्यायक रुपरेखा एहि प्रकारें रहत :

प्रथम अध्याय : शैलेन्द्र आनन्दक जीवन ओ साहित्य

एहि अध्यायक अंतर्गत शैलेन्द्र आनन्दक जन्म, शिक्षा-दीक्षा ओ जीवकोपार्जनक अतिरिक्त अन्य सामाजिक -साहित्यक ओ सांस्कृतिक गतिविधिक विश्लेषण-विवेचन कएल जाएत आ हुनक साहित्यिक कृतिक संक्षिप्त परिचय रहत ।

द्वितीय अध्याय : शैलेन्द्र आनन्दक कथा साहित्य

कथाक क्षेत्रमे प्रादुर्भाव, सामाजिक परिस्थित, कथाक क्षेत्र आदिकें विवेचित करैत ,त्रिकोण (1986), घरमुहाँ (2009) एवं एकटा रहय धुथरा (2022) आदि कथा-संग्रहमे आएल कथाक संग पत्रिका सभमे आएल फुटकर कथाक विश्लेषण रहत । हिनक कथा सामाजिक विद्रूपता पर प्रहार करैत, सामाजिक सरोकारक संग विडम्बना ओ विसंगतिक परदाफास करैत, जीवन-मूल्यक प्रति प्रतिबद्ध देखाइत अछि । ग्रामीण ठेंठ शब्दावलीक प्रयोग हिनक कथाक संग तेना भ' सटल रहैछ जे कथाकें स्वतः प्रवहमान बना दैछ । कथाक गढ़नि एतेक आकर्षक होइछ जे पाठककें स्वतः कथाक संग चलैत रहबाक लेल बाध्य करैत अछि । हिनक कथामे मानवीय संवेदनाक अजस्र धार फूटैत अछि, जे हिनका सत्तरिक बादक पीढ़ीक श्रेष्ठ कथाकरक रूपमे प्रतिस्थापित करैत लोकप्रिय बनबैत अछि । 'पिजड़ा' कथामे एकटा बजक्करि नारीक मनोभावक उद्रेककें कतेक कलात्मकताक संग प्रस्तुत कएल गेल अछि,से द्रष्टव्य थिक - "कोनो गोरि मौगीकें बिसुनपुरवाली जँ देखि लेलनि त' मिट्ठूक ऊपर विपत्ति आबि जाइत छैक । ओ ओकरा खोचारि-खोचारि कह' लगैत छथिन -"गोर छें त' गौरवे आन्हर भ' गेलौ ? आँखि त' फेर पितरिये छौ । गोर छें त'

शीला कुमारी

गोर छैं ,गोबरक चोत छैं । हम कारी छी त' कारी छी रामक बनाओल छी । पढ़ चित्रकोटकें घाट पर, पड़े संतनकें भीड़, तुलसीदास चंदन रगड़े तिलक करे राम रघुबीर । आ अभा क' हँसय लगैत छलीह।" एहने कतोक रोचक ओ चर्चित कथाक वर्णन ओ विश्लेषण एहि अध्ययायक अंतर्गत कयल जायत।

तृतीय अध्यय : शैलेन्द्र आनन्दक नाटक एवं एकांकी

एहि अध्यायमे शैलेन्द्र आनन्दक नाटक क्षेत्रक विस्तार, नाटकक मंचन आदिसँ परिचित करबैत डाकबाबू (1992), काजे तोहर भगवान (1999), दोकान काकी (2010), जोगार टेक्नोलॉजी (2018), एवं कर्मवीर (2022) आदि नाटक एवं एकांकीक विवेचन-विश्लेषण कएल जायत। शैलेन्द्र आनन्दक नाटक सामाजिक ,सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संघर्षक अविच्छिन्न अंग अछि । हिनक नाट्य-लेखन ओहि सभ आकांक्षाक पूर्ति करैछ जे सामाजिक जीवनक उत्थान-पतनकें मंचक माध्यमसँ जनजीवन धरि ल' जएबाक प्रयास अछि। सामाजिक व्यवस्थाकें बदलबाक अचूक हथियार बनबैत, ई कतिपय नाटक एवं एकांकीक प्रणयन कएलनि अछि, जाहिमे चर्चित नाटक डाकबाबूक ई अंश द्रष्टव्य - " अहाँ सभ गोटे हमरा मोन छी । हमरा गामक सभटा बात मोन अछि ओ दिन, ओ साँझ आ ओ मनहूस राति, सभटा मोन अछि । मुदा भौजी ! हम डाक बाबू छी, डाक बाबू । लाचारीक एकटा जिनगीक नाम होइत छै डाक बाबू । सरकारक नोकर । रोटीक दास ।" (डाक बाबू, पृष्ठ - 40) एहने आर कतोक नाटक एवं एकांकीक वर्णन ओ विश्लेषण एहि अध्यायमे रहत ।

चतुर्थ अध्याय : शैलेन्द्र आनन्दक कविता

समकालीन कविमे शैलेन्द्र आनन्दक स्थान प्रमुख अछि। हुनक गिनती प्रवाहपूर्ण एवं भाव-पूर्ण कविताक लेल कयल जाइत अछि । अपन व्यंग्यक चोख वाणसँ सामंती दुर्भावनाकें आक्रान्त मोनक उच्छवास मानैत अंतरंगताक संग भाव-प्रेषण करैत देखल जाइत छथि । परिवर्तित युगमे मानवीय जीवन-मूल्यकें सर्वोपरि माननिहार कविक रचनाधर्मिताकें निम्नलिखित पंक्तिमें देखल जा सकैत अछि :-

" हम जीवन सँ मृत्यु पर्यन्त
गाछ आ धरतीक लेल

शीला कुमारी

संघर्ष करैत रह' चाहैत छी
चलैत साँसासँ बंद साँस धरि
हम ओकरे भ' क' रह' चाहैत छी ।
सुनब कनो ।" (परीगत, पृ०-52)

हिनक आइ धरिक प्रकाशित कविता आ पोथी 'सपनाक संग' कविता संग्रहक विश्लेषण ओ विवेचन एहि अध्यायक अंतर्गत कयल जायत।

पांचम अध्याय :- शैलेन्द्र आनन्दक निबंध एवं अन्य रचना

एहि अध्यायक अंतर्गत पोथी वा पत्रिकामे प्रकाशित हिनक कतिपय निबन्धादिक विवेचन-विश्लेषण रहत । शैलेन्द्र आनन्दक ललित निबन्ध, व्यक्तिपरक निबन्ध, एवं अन्य प्रभृतिक निबन्धकें एहि अध्यायक अन्तर्गत विश्लेषित कएल जायत । भारतीय साहित्यक निर्माता सिरीजमे साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र' पर हिनक विनिबंध प्रकाशित भेल अछि । जकर प्रकाशन 2008 ई. मे भेल। एहि पोथीक विवेचन -विश्लेषण कएल जायत । हिनक निबंधक भाषा सरल-सहज आ आकर्षक होइत छनि । देखल जाय ----

" मानव सभ्यताक विकासक संग , गहनाक विकास भेल ओना स्थूल अर्थमे गहना मात्र सोना अथवा चाँदीसँ निर्मित वस्तुकें कहल जाइत रहल अछि, मुदा आरंभिककालमे मुनि - कन्या फूलसँ जे शृंगार करैत छलीह, ओकरो गहना नहि कहब, कतय धरि उचित ? की, ओ हुनक सौन्दर्यक अभिवृद्धि नहि करैत छल ?" (मैथिली दर्पण, पृ०-15)

उपसंहार

शोध-प्रबन्धक सम्पूर्ण सार संक्षिप्त रूपमे प्रस्तुत कएल जायत एवं एकर उपयोगिताक मूल्यांकन दर्शाओल जाएत।

शीला कुमारी

परिशिष्ट

(क) एकर अंतर्गत शैलेन्द्र आनन्दक साक्षात्कार, अप्रकाशित कृतिक सूची, एवं अन्य-सामग्री रहत ।

(ख) अधीत ग्रंथक सूची

अधीत ग्रंथक सूची

1. 'श्रीश', डॉ० दुर्गानाथ झा , वर्ष -2022, मैथिली साहित्यक इतिहास, भारती पुस्तक केंद्र, दरभंगा।

2. 'व्यथित', डॉ० बालगोविंद झा, वर्ष-1982, मैथिली साहित्यक इतिहास, भारती पुस्तक केंद्र, दरभंगा।

3. झा, डॉ० दिनेश कुमार, मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास, मैथिली अकादमी, पटना।

4. आनन्द, शैलेन्द्र आ अन्य(सम्पादन), वर्ष -1986, त्रिकोण (कथा संग्रह)- उर्वशी प्रकाशन, पटना।

5. आनन्द, शैलेन्द्र, वर्ष - 2009, घरमुहाँ, जखन तखन, दरभंगा।

6. आनन्द, शैलेन्द्र,वर्ष -2022, एकटा रहय धुथरा, नवारम्भ, पटना।

7. आनन्द, शैलेन्द्र, वर्ष -1992, डाकबाबू , उर्वशी प्रकाशन, पटना।

8. आनन्द, शैलेन्द्र, वर्ष -1999, काजे तोहर भगवान, उग्रतारा प्रकाशन, लोहना, मधुबनी।

9. आनन्द शैलेन्द्र, वर्ष -2018 ,जोगार टेक्नोलॉजी, नवारम्भ, पटना।

10. आनन्द शैलेन्द्र, वर्ष - 2010, दोकान काकी, जखन तखन, दरभंगा।

11. आनन्द शैलेन्द्र, वर्ष - 2016, सपनाक संग, उग्रतारा प्रकाशन, लोहना, मधुबनी।

12. आनन्द, शैलेन्द्र, वर्ष -2008, धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'(विनिबंध) साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।

शीला कुमारी

13. आनन्द, विभूति मेहता अशोक कुमार(सम्पादन),वर्ष -2011, भावभूमि रसवंत, जखन तखन, दरभंगा।

14. आनन्द, शैलेन्द्र, वर्ष - 2022, हेडमास्टर, इरागाद प्रकाशन, कटहलवाड़ी, दरभंगा।

15. मिश्र, प्रो० श्री आनन्द (सम्पादन) वर्ष -1997, पंडित श्री गोविंद झा: अर्चा ओ चर्चा, राजेन्द्र नगर, पटना।

16. मिश्र, डॉ० सदन (सम्पादन), वर्ष - 2010, अमर कथा-शिल्पी मनमोहन झा, , साहित्यकी प्रकाशन सरिसव-पाही, मधुबनी।

17. झा, डॉ० विनोदानन्द(सम्पादन) , वर्ष -2022, किरण प्रसंग, किरण मैथिलि शोध संस्थान उजान, लोहनारोड, दरभंगा।

18. मेहता,डॉ० अशोक कुमार(सम्पादन) , 2012 ई,संप्रति, मैथिली विभाग, चन्द्रधारी मिथिला विज्ञान महाविद्यालय, दरभंगा।

19. आनन्द, शैलेन्द्र(सम्पादन) , 2021ई, गीत - परिक्रमा, पांचजन्य प्रकाशन, चेन्नई।

पत्र- पत्रिका :-

1. आहुति, संपादक- शैलेन्द्र आनन्द, लोहना, मधुबनी।

शोध - पर्यवेक्षक

दमन कुमार झा 3/4/24

प्रो० दमन कुमार झा

प्राचार्य एवं अध्यक्ष

विश्वविद्यालय मैथिली विभाग

ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय

दरभंगा ।

शोधार्थी

शीला कुमारी
30/03/2024

शीला कुमारी

BR04000099

PAT-2021-22

E2211013 JRF

ग्रा०+पो० - मझौलिया

थाना - अशोक पेपर मिल

प्रखंड - हायाघाट

जिला -दरभंगा

पिन कोड – 846002